Maharashtra Board Solutions for Class 10- Hindi Lokbharti (Part 1): Chapter 7- खुला आकाश

For any clarifications or questions you can write to **info@indcareer.com**

Postal Address

IndCareer.com, 52, Shilpa Nagar, Somalwada Nagpur - 440015
Maharashtra, India

WhatsApp: +91 9561 204 888, **Website:** https://www.indcareer.com
https://www.indcareer.com/schools/maharashtra-board-solutions-for-class-10-hindi-lokbharti-part-1-chapter-7-khula-akash/

Maharashtra Board Solutions for Class 10- Hindi Lokbharti (Part 1): Chapter 7- खुला आकाश

Class 10: Hindi Lokbharti Chapter 7 solutions. Complete Class 10 Hindi Lokbharti Chapter 7 Notes.

Maharashtra Board Solutions for Class 10- Hindi Lokbharti (Part 1): Chapter 7- खुला आकाश

Maharashtra Board 10th Hindi Lokbharti Chapter 7, Class 10 Hindi Lokbharti Chapter 7 solutions

सूचना के अनुसार कृवियाँ कीविए:

(1) प्रहवलका पूण् कीविए:

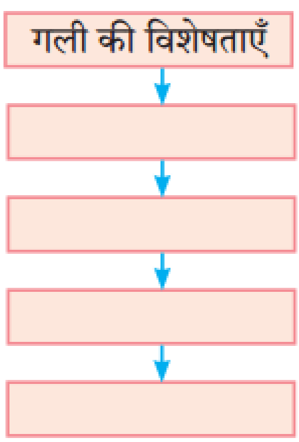

उत्तर:

गली की विशेषताएँ–

↓ आसमान नहीं दिखाई देता

↓ पेड़ नहीं हैं

↓ न पेड़ लगाने की जगह है

↓ मकान पर मकान लदे लगते हैं

(2) कृवि पूण् कीविए:

१. गली से यह नहीं दिखता – ---------- / ----------

२. लेखक ऐसी जिंदगी बिताना नहीं चाहता – ---------- / ----------

उतर:

गली से यह नहीं दिखता –
- आसमान
- घोंसले बनाती चिड़ियाँ

लेखक ऐसी जिंदगी बिताना नहीं चाहता–
- चीजों को लुका-छिपाकर
- बातों और व्यवहार को रचा-बसाकर

(3) आकृवि मे वलखिए:

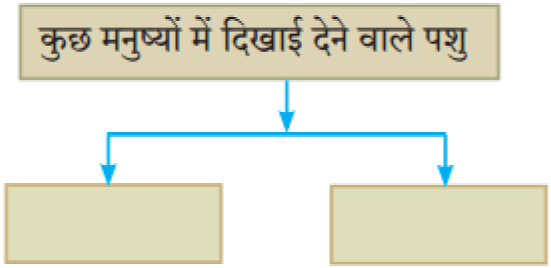

उतर:

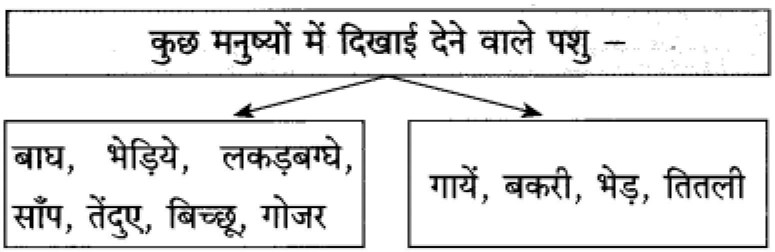

(4)

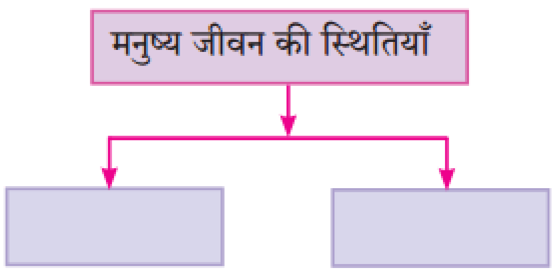

उतर:

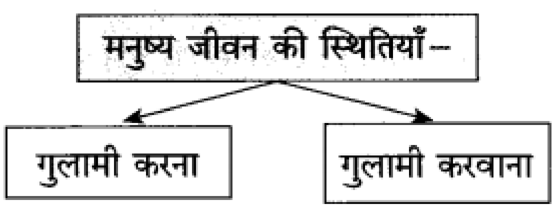

(5) लिखिए:

a.

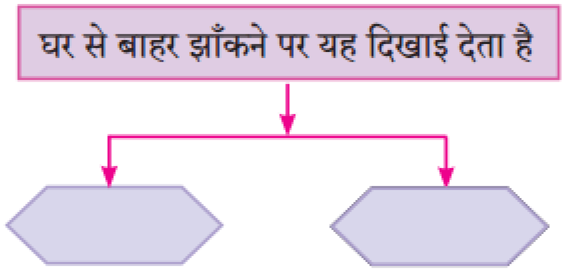

उतर:

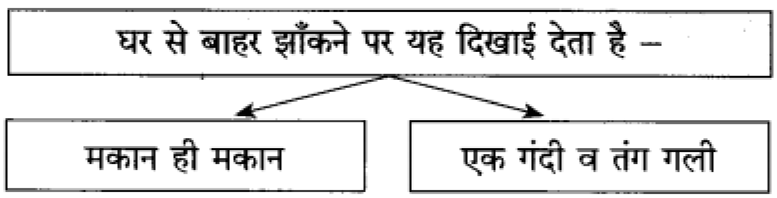

b.

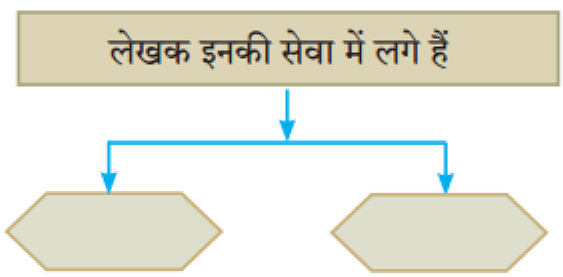

उतर:

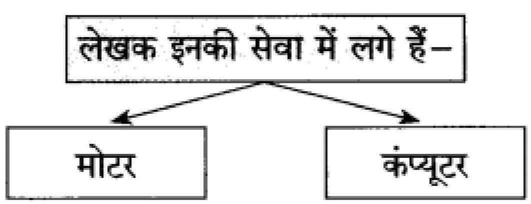

भाषा हबंदु

(1) हनम्हलखखत संहध हिचछेद की संहध कीहजए और भेद हलखखए:

https://www.indcareer.com/schools/maharashtra-board-solutions-for-class-10-hindi-lokbharti-part-1-chapter-7-khula-akash/

अनु.	शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
१.	सज्जन	+	----------
२.	नमस्ते	+	----------
३.	स्वागत	+	----------
४.	दिग्दर्शक	+	----------
५.	यद्‌यपि	+	----------
६.	दुस्साहस	+	----------

उतर:

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
(i) सज्जन	सत् + जन	व्यंजन संधि
(ii) नमस्ते	नमः+ ते	विसर्ग संधि
(iii) स्वागत	सु + आगत	स्वर संधि
(iv) दिग्दर्शक	दिक् + दर्शक	व्यंजन संधि
(v) यद्‌यपि	यदि + यपि	स्वर संधि
(vi) दुस्साहस	दुः + साहस	विसर्ग संधि

(2) हनम्हलखखत शब् का संहध हिचछेद कीहजए और भेद हलखखए:

अनु.	संधि विच्छेद	संधि शब्द	संधि भेद
१.	दु:+लभ	----------	----------
२.	महा+आत्मा	----------	----------
३.	अन्+आसक्त	----------	----------
४.	अंत:+चेतना	----------	----------
५.	सम्+तोष	----------	----------
६.	सदा+एव	----------	----------

उतर:

संधि विच्छेद	संधि शब्द	संधि भेद
(i) दुः + लभ	दुर्लभ	विसर्ग संधि
(ii) महा + आत्मा	महात्मा	स्वर संधि
(iii) अन् + आसक्त	अनासक्त	स्वर संधि
(iv) अंतः + चेतना	अंतश्चेतना	विसर्ग संधि
(v) सम् + तोष	संतोष	व्यंजन संधि
(vi) सदा + एव	सदैव	स्वर संधि

(3) हनम्हलखखत आकृहत मे हदए गए शब् का हिचछेद कीहजए और संहध का भेद हलखखए:

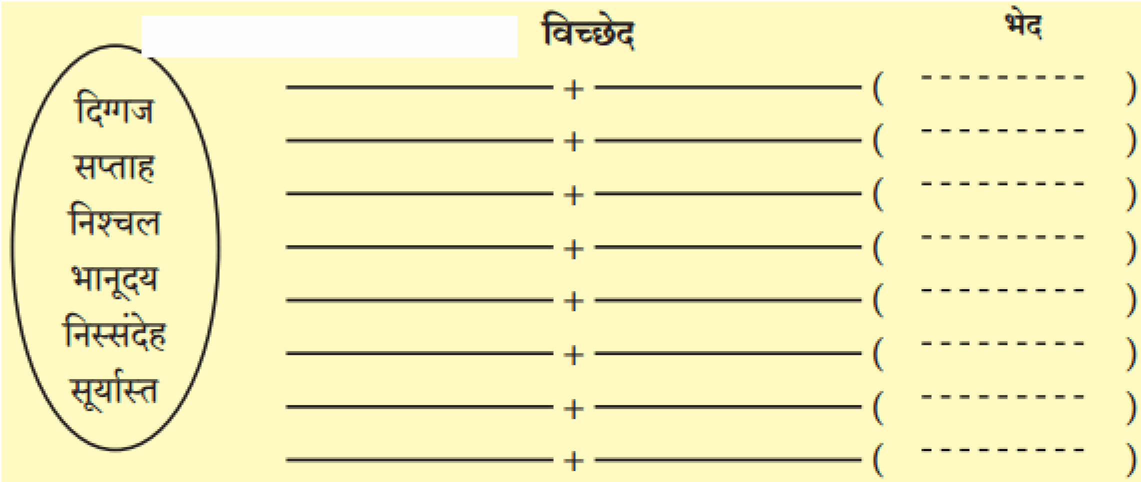

उतर:

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
(i) दिग्गज’	दिक् + गज	व्यंजन संधि
(ii) सप्ताह	सप्त + अह	स्वर संधि
(iii) निश्चल	निः + चल	विसर्ग संधि
(iv) भानूदय	भानु + उदय	स्वर संधि
(v) निस्संदेह	निः + संदेह	विसर्ग संधि
(vi) सूर्यास्त	सूर्य + अस्त	स्वर संधि

(4) पाठो मे आए संहध शब् छाँटकर उनका हिचछेद कीहजए और संहध का भेद हलखखए।

संधि शब्द	संधि विच्छेद	संधि भेद
(i) निर्जीव	निः + जीव	विसर्ग संधि

(ii) संभव	सम् + भव	व्यंजन संधि
(iii) उज्ज्व	लउत् + ज्वल	व्यंजन संधि

गद्यांश क्र.1

कृति 1: (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए:

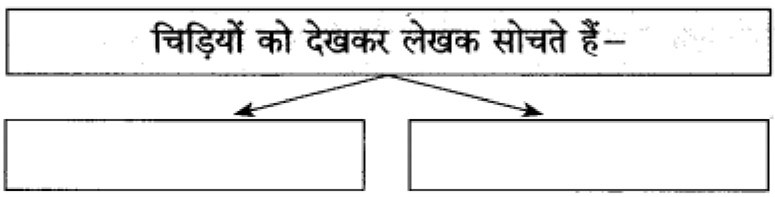

उत्तर:

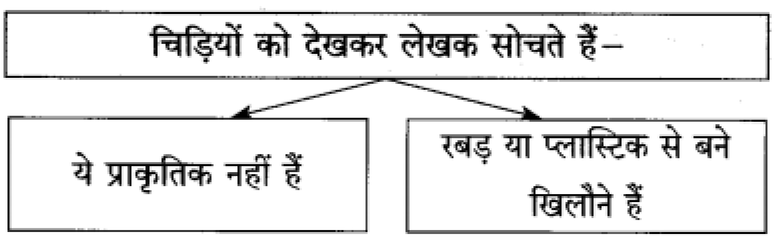

(2) उत्तर लिखिए: (बोर्ड की नमूना कृतिपत्रिका)

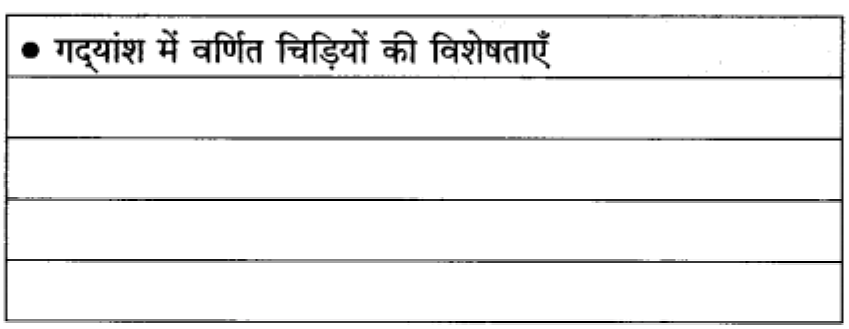

उत्तर:

• गद्यांश में वर्णित चिड़ियों की विशेषताएँ
पेड़ों पर बैठने वाली
आसमान में न उड़ने वाली
टेलीफोन के तारों पर चुपचाप बैठने वाली
घरों के अंदर घोंसले न बनाने वाली

कृति **2:** (स्वमत अभिव्यक्ति)

'बढ़ती हुई जनसंख्या का मनुष्य जीवन पर प्रभाव' के बारे में आपके विचार **25** से **30** शब्दों में लिखिए। **(**बोर्ड की नमूना कृतिपत्रिका**)**

उत्तर**:**

आज लगभग सभी देशों की जनसंख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है। यह जनसंख्या वृद्धि आज संसार के समक्ष एक समस्या बन गई है। सभी देशों के संसाधन सीमित हैं और बढ़ी हुई जनसंख्या की माँग विशाल है, जिसकी पूर्ति करना संभव नहीं है। इसी का परिणाम है कि आज लोगों के सामने बेकारी की समस्या उत्पन्न हो गई है। जनसंख्या वृद्धि के कारण कृषि पर आधारित लोग परेशान हैं। खेती योग्य जमीन बँटती जा रही है।

अब वह इतने लोगों को रोटी देने में असमर्थ हो गई है। गाँवों की आबादी का बोझ शहरों पर आ पड़ा है। यहाँ शहरों में बेकारी की समस्या है। यहाँ भी लोग रोटी, कपड़ा, मकान की समस्याओं से जूझ रहे हैं। लोग गंदी बस्तियों में रहने के लिए मजबूर हैं। न इतने लोगों के लिए ढंग की शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध हो पा रही है और न ही चिकित्सा व्यवस्था।

बढ़ती जनसंख्या ने देश की अर्थव्यवस्था बिगाड़ दी है। इस पर अंकुश लगाकर ही इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। तभी मनुष्य के जीवन स्तर में भी सुधार हो पाएगा।

गद्यांश क्र.**2**

प्रश्न**.**

निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए**:**

कृति **1:** (आकलन)

(2) सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए**:**

(i) बिलकुल चुपचाप बैठकर सिर्फ ………………………… बारे में सोचें। (मेरे/अपने/सबके)

(ii) दूसरों की सोच-समझ पर ………………………… रखें। (भरोसा/प्रेम/संदेह)

(iii) ………………………… अन्य नहीं, अंतमय है, हमारे ही प्रतिरूप, हमसे अलग या भिन्न नहीं। (दूसरा /सब/वह)

(iv) ………………………… तरह सारे मनुष्य केवल मनुष्य होते और कुछ नहीं। (इसी/उसी/किसी)

उत्तर:

(2) (i) बिलकुल चुपचाप बैठकर सिर्फ अपने बारे में सोचें।

(ii) दूसरों की सोच-समझ पर भरोसा रखें।

(iii) दूसरा अन्य नहीं, अंतमय है, हमारे ही प्रतिरूप, हमसे अलग या भिन्न नहीं।

(iv) उसी तरह सारे मनुष्य केवल मनुष्य होते और कुछ नहीं।

कृति **2:** **(**स्वमत अभिव्यक्ति**)**

‘आत्मचिंतन के लाभ’ विषय में अपने विचार **25** से **30** शब्दों में लिखिए।

उत्तर:

आत्मचिंतन यानी स्वयं के विषय में चिंतन करना। आत्मचिंतन का अर्थ है किसी कार्य को करने या होने के बाद उसे करने के लिए अपनाई. गई क्रिया और विचार पद्धति का विश्लेषण। आत्मचिंतन के द्वारा हमें अपनी गलतियों से सीखने, साथ ही अपने किए गए कार्य को और बेहतर ढंग से करने का मौका मिलता है। किसी भी व्यक्ति को कोई दूसरा जितना सिखा सकता है, उससे कहीं अधिक वह अपने स्वाध्याय एवं आत्मचिंतन के द्वारा सीख सकता है। इस प्रक्रिया में हम शांत भाव से बैठकर किसी समस्या या मुद्दे के बारे में चिंतन कर सकते हैं।

छात्र जीवन में तो इसकी और भी अधिक आवश्यकता है। अपनी क्षमताओं के विषय में अच्छी तरह जाने-समझे बिना हम लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं। शीघ्रातिशीघ्र उसे प्राप्त कर लेना चाहते हैं और बाद में भटक जाते हैं। इसलिए पहले आत्मचिंतन करें, स्वयं को जानें, फिर लक्ष्य प्राप्ति का प्रयास करें।

गद्यांश क्र**. 3**

प्रश्न**.**

निम्नलिखित पठित गद्यांश पढकर दी गई ‘सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए:

कृति **1:** **(**आकलन**)**

(1) उत्तर लिखिए:

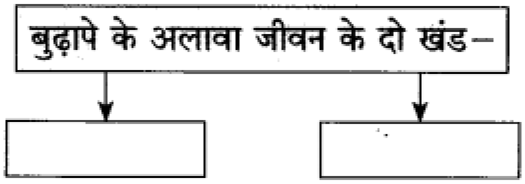

उत्तर:

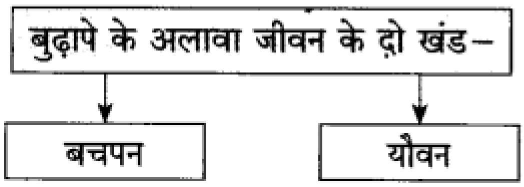

कृति **2:** (स्वमत अभिव्यक्ति)

'जीवन की सार्थकता के विषय में अपने विचार **25** से **30** शब्दों में लिखिए।

उत्तर:

ईश्वर ने हमें सर्वश्रेष्ठ योनि अर्थात मानव योनि में जन्म दिया है। हमारा कर्तव्य है कि हम मानव जाति के लिए कुछ अच्छा कार्य करें। हमें जितनी आयु मिली है, वह समय हम अच्छे कार्यों को करने में लगाएँ। कुछ ऐसा काम करें जिससे समाज और देश का हित हो।

कुछ लोग समय की कमी की बात करते हैं। लेकिन यदि कुछ करने की लगन हो तो समय आड़े नहीं आता। स्वामी विवेकानंद 40 वर्ष की आयु से भी पहले इस संसार से चले गए। ईसा मसीह का 30 वर्ष की आयु में ही प्राणांत हो गया। रामानुजम, रानी लक्ष्मीबाई, नेपोलियन, सिकंदर और अन्य अनेक अल्पायु में ही इस असार संसार को छोड़ गए, फिर भी मानव इतिहास में, ये महापुरुष अपनी छाप छोड़ गए।

सीमित समय में भी जितना अधिक-से-अधिक अच्छा हो सके, हमें देश व समाज के कल्याण के लिए कुछ सकारात्मक अवश्य करना चाहिए।

गद्यांश क्र. **4**

प्रश्न.

निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए:

कृति **1:** (आकलन)

(1) आकृति पूर्ण कीजिए:

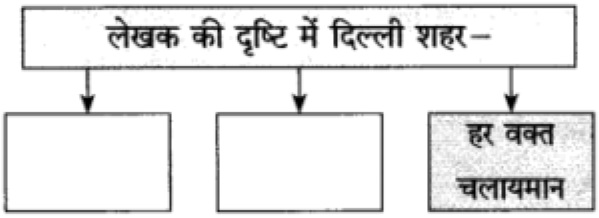

उत्तर:

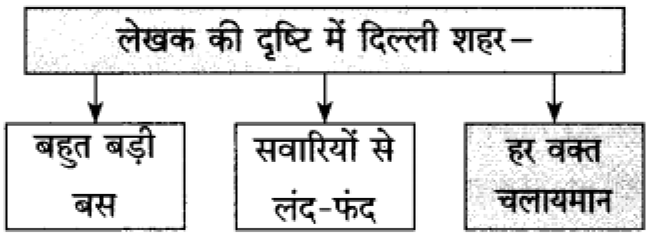

(2) जोड़ियाँ मिलाइए:

अ	आ
(i) शौक	भविष्य
(ii) एकनिष्ठ	गुलाम
(ii) उज्ज्वल	रास्ते
(iv) दरजनों	सेवा

उत्तर:

अ	आ
(i) शौक	रास्ते
(ii)	सेवा

एकनिष्ठ

(iii)
उज्ज्वल भविष्य

(iv) दरजनों गुलाम

कृति **2:** (स्वमत अभिव्यक्ति)

→ 'जो हम शौक से करना चाहते हैं, उसके लिए रास्ते निकाल लेते हैं, इसका सोदाहरण अर्थ **25** से **30** शब्दों में लिखिए।

उत्तर:

जिन कामों या चीजों का हमें शौक होता है, जिसमें हमारी रुचि होती है, उसके लिए हम समय, विधा सब निकाल लेते हैं। रुचि सफलता की वाहक है। हम सभी अपनी रुचि के कामों को करते समय उसमें डूब जाते हैं। उसी का परिणाम होता है सफलता। शिक्षा काल में जिस विषय में हमारी रुचि होती है, उसे पढ़ने में हम सारी रात भी जग लेते हैं, जबकि किसी ऐसे विषय की पुस्तक खोलते ही आँखें नींद से भर आती हैं, जो हमें पसंद न हो।

व्यायाम, तैराकी, बागवानी, चित्रकला, गायन, वादन आदि ऐसे अनेक कार्य हैं, जिनका यदि शौक हो तो मनुष्य घंटों बिताने पर भी उनसे ऊब अनुभव नहीं करता। किसी भी काम में सफलता प्राप्त करने के लिए उसमें रुचि होना परम आवश्यक है। बिना रुचि के आगे बढ़ने की संभावना बहुत कम होती है। जिस काम में हमारी रुचि होती है, उसे करने के लिए हम अपनी सारी ऊर्जा लगा देते हैं। न दिन देखते हैं, न ही रात। थकान शब्द तो मानो हमारे शब्दकोश में कभी था ही नहीं।

→ 'कंप्यूटर ज्ञान का महासागर' विषय पर तर्कपूर्ण चर्चा कीजिए।

उत्तर:

कंप्यूटर इस पृथ्वी पर कल्पवृक्ष के समान है। जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहाँ इसका महत्व न हो। सूचना के क्षेत्र में कंप्यूटर के कारण अद्भुत क्रांति आ गई है। इंटरनेट इसकी अनुपम देन है। दुनियाभर की जानकारी हम मिनटों में प्राप्त कर सकते हैं। यह एक सेकंड में दस हजार करोड़ गणितीय गणना कर सकता है।

चाहे मौसम का पूर्वानुमान हो या प्राकृतिक गैस और खनिज भंडारों का पता लगाना हो, रेलगाड़ियों और हवाईजहाजों का आरक्षण कराना हो या संसारभर की जानकारी प्राप्त करनी हो, कंप्यूटर के द्वारा घर बैठे हम मिनटों में कर सकते हैं। यह समय-समय पर भौगोलिक सूचनाओं से संबंधित जानकारी भी देता है। मुद्रण व प्रसारण के क्षेत्र में इसका योगदान असीमित है।

कंप्यूटर एक चालक की भाँति वायुयान का संचालन करता है। चालक के बटन दबाते ही कंप्यूटर स्वयं गति और दिशा का निर्धारण कर लेता है। शिक्षा के क्षेत्र में तो आज कंप्यूटर एक अनिवार्यता बन गया है।

→ महानगरीय/ग्रामीण दिनचर्या के लाभ तथा हानि के बारे में अपने अनुभव के आधार पर लिखिए।

उत्तर:

गाँवों में आज भी खुला आसमान है। वहाँ का वातावरण शुद्ध, प्रकृति की गोद में है, जबकि महानगरों में आसमान दिखाई नहीं पड़ता। बड़े पैमाने पर वाहनों से होने वाला प्रदूषण, लगातार होने वाला शोर, भीड़ और धुआँ असहज महसूस कराता है। भीड़भाड़, ट्रैफिक जाम, और अपराध महानगरों में रोज की बात है। गाँवों में एक प्रकार का ठहराव है। शाम ढलते ही चारों ओर एक प्रकार का सन्नाटा पसर जाता है।

जबकि, महानगरों में जीवन हर समय गतिमान रहता है। देर रात तक ऑफिस, दुकानें खुली रहती हैं। बस, ट्रेन, टैक्सियाँ, स्कूटर्स सड़कों पर दौड़ते रहते हैं। गाँवों में धूप, हरियाली और शांति का आनंद प्राप्त कर सकते हैं। लोग आज भी गर्मजोशी से मिलते हैं। एक-दूसरे के दुख-तकलीफ में काम आते हैं। महानगरों में बहुत-से लोग पड़ोसी तक को नहीं पहचानते। दोस्तों, रिश्तेदारों के लिए समय नहीं निकाल पाते।

यहाँ लोगों के पास पैसा है, सुविधाएँ हैं, पर शांति कोसों दूर है। ग्रामीण लोगों का जीवन महानगरों की भागदौड़ से दूर एवं प्रकृति के करीब होता है। दूसरी ओर महानगरों में लोग हमेशा समय को पकड़ने के लिए दौड़ते रहते हैं। अति व्यस्तता के कारण तनाव, फिर स्वास्थ्य। संबंधी विभिन्न परेशानियाँ उन्हें घेर लेती हैं।

अपवठि गदयांश

नम्वलखिि पररचछे पढ़कर सूचना के अनुसार कृवियाँ कीविए:

हर फकसी को आतमरक् करनी होगी, हर फकसी को अपना कत्यय करना होगा। मै फकसी की सहायता की प्राशा नही करता। मै फकसी का भी प्राह नही करता। इस दुफनया से मदद की प्या करने का मुझे कोई अफधकार नही है। अतीत मे फिन लोगो ने मेरी मदद की है या भफव् मे भी लोग मेरी मदद करें, मेरे प्र उन सबकी करुण मिौद है, इसका दाव कभी नही फकया सकता। इसीफलए मै सभी लोगो के प्र फचर कक तज ञँ।

तुमहारी पररफस्फत इतनी बुरी देखकर मै बेहद फचंफतत हँ। लेफकन यह लो फक-‘तुमसे भी जयादा दुखी लोग इस संसार मे है। मै तुमसे भी जयादा बुरी पररफस्फत मे हँ। इंग् मे सब कुछ के फलए मुझे अपनी ही िब से खच् करना पड़ता है। आमदनी कुछ भी नही है। लंदन मे एक कमरे का फकराया हर सप्ह के फलए तीन पाउंड होता है। ऊपर से अनय कई खच् है। अपनी तकलिीो के फलए मै फकससे फशकायत करू? यह मेरा अपना कम्यल है, मुझे ही भुगतना होगा।’

(फववकानंद की आतमकथा से)

(1) कृवि पूण् कीविए:

1. 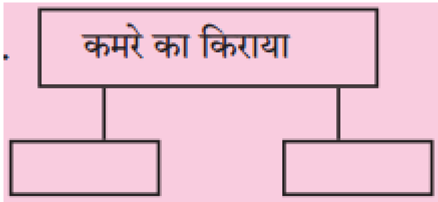

2. 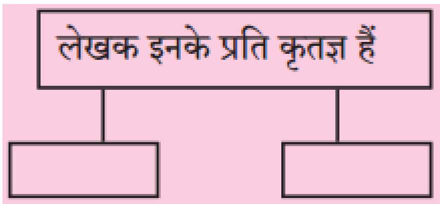

(2) उतिर वलखिए**:**

1. पररचछेद मे उखलिखत देश – [ ]

2. हर फकसी को करना होगा – [ ]

3. लेखक की तकलिी – [ ]

4. हर फकसी को करनी होगी – [ ]

(3) वनदोनुसार हल कीविए**:**

(अ) वनम्वलखिि अर् से मेलनेला शब् उपयुथ् पररचछे से ढूँढ़कर वलखिए ः

1. स्वं की रक् करना – ……………………………

2. दूसरो के उपकारो को मानने वला – ……………………………

(4) लंग पहचानकर वलखिए:

1. जेब [ ]

2. साहित्य [ ]

3. दावा [ ]

4. सेवा [ ]

विषय-प्रवेश : प्रस्तुत पाठ डायरी विधा का एक उदाहरण है। कुँवर नारायण जी ने इस पाठ के माध्यम से नगरों की भीड़, वहाँ की जीवन-शैली, जीवन के संघर्ष, आत्मचिंतन आदि पर प्रकाश डाला है। लेखक मानते हैं कि व्यक्ति के

विकास में आत्मचिंतन का बड़ा महत्त्व है। इसके द्‌वारा हम अपनी क्षमताओं के बारे में और अधिक जान सकेंगे। साथ ही अपनी गलतियों से सीख ले सकेंगे।

Maharashtra Board Solutions Class 10 Hindi Lokbharti

Part 1

- Chapter 1- भारत महिमा
- Chapter 2- लक्ष्मी
- Chapter 3- वाह रे! हमदर्द
- Chapter 4- मन
- Chapter 5- गोवा : जैसा मैंने देखा
- Chapter 6- गिरिधर नागर
- Chapter 7- खुला आकाश
- Chapter 8- गजल
- Chapter 9- रीढ की हड्डी
- Chapter 10- ठेस
- Chapter 11- कृषक गान

Part 2

- Chapter 1- बरषहिं जलद
- Chapter 2- दो लघुकथाएँ
- Chapter 3- श्रम साधना
- Chapter 4- छापा
- Chapter 5- ईमानदारी की प्रतिमूर्ति
- Chapter 6- हम उस धरती की संतति हैं
- Chapter 7- महिला आश्रम
- Chapter 8- अपनी गंध नहीं बेचूँगा
- Chapter 9- जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ
- Chapter 10- बूढ़ी काकी
- Chapter 11- समता की ओर

About About Maharashtra State Board (MSBSHSE)

The Maharashtra State Board of Secondary and Higher Secondary Education or MSBSHSE (Marathi: महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक आणि उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडळ), is an **autonomous and statutory body established in 1965**. The board was amended in the year 1977 under the provisions of the Maharashtra Act No. 41 of 1965.

The Maharashtra State Board of Secondary & Higher Secondary Education (MSBSHSE), Pune is an independent body of the Maharashtra Government. There are more than 1.4 million students that appear in the examination every year. The Maha State Board conducts the board examination twice a year. This board conducts the examination for SSC and HSC.

The Maharashtra government established the Maharashtra State Bureau of Textbook Production and Curriculum Research, also commonly referred to as Ebalbharati, in 1967 to take up the responsibility of providing quality textbooks to students from all classes studying under the Maharashtra State Board. MSBHSE prepares and updates the curriculum to provide holistic development for students. It is designed to tackle the difficulty in understanding the concepts with simple language with simple illustrations. Every year around 10 lakh students are enrolled in schools that are affiliated with the Maharashtra State Board.

FAQs

Where do I get the Maharashtra State Board Books PDF For free download?

You can download the Maharashtra State Board Books from the eBalbharti official website, i.e. cart.ebalbharati.in or from this article.

Add image

How to Download Maharashtra State Board Books?

Students can get the Maharashtra Books for primary, secondary, and senior secondary classes from here. You can view or download the Maharashtra State Board Books from this page or from the official website for free of cost. Students can follow the detailed steps below to visit the official website and download the e-books for all subjects or a specific subject in different mediums.

Step 1: Visit the official website *ebalbharati.in*

Step 2: On the top of the screen, select "Download PDF textbooks"

Step 3: From the "Classes" section, select your class.

Step 4: From "Medium", select the medium suitable to you.

Step 5: All Maharashtra board books for class 11th will now be displayed on the right side.

Step 6: Click on the "Download" option to download the PDF book.

Who developed the Maharashtra State board books?

As of now, the MSCERT and Balbharti are responsible for the syllabus and textbooks of Classes 1 to 8, while Classes 9 and 10 are under the Maharashtra State Board of Secondary and Higher Secondary Education (MSBSHSE).

How many state boards are there in Maharashtra?

The Maharashtra State Board of Secondary & Higher Secondary Education, conducts the HSC and SSC Examinations in the state of Maharashtra through its nine Divisional Boards located at Pune, Mumbai, Aurangabad, Nasik, Kolhapur, Amravati, Latur, Nagpur and Ratnagiri.

About IndCareer

IndCareer.com is a leading developer of online career guidance resources for the Indian marketplace. Established in 2007, IndCareer.com is currently used by over thousands of institutions across India, including schools, employment agencies, libraries, colleges and universities.

IndCareer.com is designed to assist you in making the right career decision - a decision that meets your unique interests and personality.

For any clarifications or questions you can write to **info@indcareer.com**

Postal Address

IndCareer.com

52, Shilpa Nagar,

Somalwada

Nagpur - 440015

Maharashtra, India

WhatsApp: +91 9561 204 888

Website: https://www.indcareer.com